विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-०८/०९/२०२० (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ: सप्तम: पाठनाम सौहार्दं प्रकृते: शोभा

अगाधजलसञ्चारी न गर्वं याति रोहित: ।

अङ्गुष्ठोदकमात्रेण शफरी फुर्फुरायते ।।

अत: भवन्त: सर्वेऽपि शफरीवत् एकैकस्य गुणस्य चर्चा विहाय मिलित्वा प्रकृतिसौन्दर्याय वनरक्षायै च प्रयतन्ताम् ।

सर्वे प्रकृतिमातरं प्रणमन्ति मिलित्वा दृढसंकल्पपूर्वकं च गायन्ति-

अर्थ-

अथाह जल में रहनेवाला रोहू मछली कभी गर्व नहीं करता है।

अंगूठा मात्र पानी में रहने वाली शफरी नामक मछली फुर्फुराती

है। इसलिए आपसभी छोटी शफरी मछली की तरह एक-एक के

गुणकी चर्चा को छोडकर प्रकृति सुन्दरता और वन की रक्षा के

मिलकर प्रयत्न करें ।

सभी जीव जन्तु प्रकति माता को प्रणाम करते हैं और

मिलकर मजबूत संकल्प के साथ गाते हैं।